Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.S.W. -2

व्यावसायिक समाज कार्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य

(Professional Social Work: Indian Perspective)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain*

NEERAJ
PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

व्यावसायिक समाज कार्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य

(Professional Social Work: Indian Perspective)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2

Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2

Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-3

Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2

Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2

Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2

Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2

Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. समाज कार्य का इतिहास : राज्य की पहलें 1
(History of Social Work: State's Initiations)

2. समाज कार्य का इतिहास : व्यक्तिगत पहलें 19
(History of Social Work: Individual Initiations)

3. समाज कार्य का इतिहास : सामाजिक आंदोलनों द्वारा पहलें 26
(History of Social Work: Social Movements Initiations)

4. भारत में समाज कार्य का इतिहास : गैर-सरकारी संगठनों द्वारा पहलें 35
(History of Social Work in India : Non-government Organisations' Initiations)

5. हिन्दू धर्म और समाज कार्य 48
(Hindu Religion and Social Work)

6. इस्लाम धर्म और समाज कार्य 57
(Islam Religion and Social Work)

7. सिख धर्म और समाज कार्य 64
(Sikh Religion and Social Work)

8. जैन धर्म और समाज कार्य 71
(Jain Religion and Social Work)

9. बौद्ध धर्म और समाज कार्य 78
(Bodh Religion and Social Work)

10. ईसाई धर्म और समाज कार्य 85
(Christianity and Social Work)

11. गाँधीजी की दृष्टि में एक आदर्श समाज 92
(Gandhi's Perception of an Ideal Society)

12. सामाजिक पुनर्निर्माण का गांधीजी का घोषणापत्र 98
(Gandhi's Charter of Social Reconstruction)

13. गाँधीजी का समाज कार्य: विधियाँ एवं तकनीक 104
(Gandhian Social Work: Methods and Techniques)

14. गाँधीजी का समाज कार्य: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य 110
(Gandhian Social Work: The Histroical Perspective)

15. गांधीवादी अवधि के बाद समाज कार्य 115
(Social Work in Post-Gandhian Era)

16. समाज कार्य शिक्षा और प्रशिक्षण की वृद्धि 120
(Growth of Social Work Education)

17. समाज कार्य साहित्य 126
(Social Work Literature)

18. राष्ट्रीय विकास में सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की सहभागिता 132
(Involvement of Soical Workers in National Development)

19. व्यावसायिक समाज कार्य में कैरियर संभावनाएँ 138
(Career Prospects in Professional Social Work)

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

व्यावसायिक समाज कार्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य

(Professional Social Work: Indian Perspective)

M.S.W.-2

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : (i) सभी ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए* ***(ii)*** सभी *प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. भारतीय समाज पर सामाजिक सुधार आन्दोलनों के प्रभाव का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-32, प्रश्न 1

अथवा

भारत में सामाजिक सुधार में ईसाई धर्म के योगदान की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-88, 'भारत में सामाजिक सुधार में ईसाई धर्म का योगदान'

प्रश्न 2. सत्याग्रह की आठ तकनीकों की सूची बनाइए। उपयुक्त उदाहरणों के साथ किन्हीं चार तकनीकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-108, प्रश्न 3

अथवा

नीति निर्माण और विकास में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ 134, 'नीति निरूपण और विकास में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका'

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) भारत के समाज सुधारकों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

***(i)* विनोबा भावे**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-24, प्रश्न 5

***(ii)* रवीन्द्रनाथ टैगोर**

उत्तर–राष्ट्रवाद के बारे में यह रवीन्द्रनाथ टैगोर का दृष्टिकोण था। 'विश्व कवि' एक दूरदर्शी व्यक्ति थे, जिन्होंने भारत में शिक्षा और साहित्य में क्रांति ला दी।

नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले एकमात्र भारतीय साहित्यकार रवीन्द्रनाथ ने न केवल साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि उन्होंने स्वतंत्रता-पूर्व भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी योगदान दिया है।

टैगोर पारंपरिक कक्षा शिक्षा के खिलाफ थे। उनका मानना था कि सीखने के लिए प्रकृति के साथ संपर्क आवश्यक है। 29 दिसंबर, 1918 को टैगोर ने विश्व भारती विश्वविद्यालय की आधारशिला रखी। उन्होंने अपनी नोबेल पुरस्कार राशि को पश्चिम बंगाल के बोलपुर में परिसर और एक शहर के निर्माण में निवेश किया। उन्होंने उस स्थान का नाम शांतिनिकेतन रखा, जो शांति का निवास है। उनके शैक्षिक सुधार दुनिया भर के कई पाठ्यक्रमों में शामिल हैं। टैगोर ने मनुष्य की सार्वभौमिकता को समझाया, स्वतंत्रता संग्राम का उद्देश्य विरोध से प्रगति में बदल गया। आज़ादी के बाद भारत की पहचान टैगोर की शांति और सार्वभौमिक भाईचारे की विचारधारा पर आधारित थी।

(ख) हिन्दू धर्म और आधुनिक सामाजिक कार्य के बीच सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-55, प्रश्न 3

(ग) बुनियादी शिक्षा और वयस्क शिक्षा में क्या अन्तर है?

उत्तर–बुनियादी शिक्षा ज्ञान प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है, जो स्कूल में होती है। यह मुख्य रूप से निर्देश और अध्ययन से बना है। बुनियादी शिक्षा तीन कौशलों पर आधारित है–पढ़ना, लिखना और अंकगणित। ये कौशल स्कूल और बाद में जीवन में सफलता के लिए आवश्यक बुनियादी तैयारी प्रदान करते हैं।

बुनियादी शिक्षा को अक्सर दो उपसमूहों में विभाजित किया जाता है–

1. सामान्य शिक्षा, 2. विशिष्ट शिक्षा

सामान्य शिक्षा–सामान्य शिक्षा सभी छात्रों के लिए उपलब्ध है।

विशिष्ट शिक्षा–विशिष्ट शिक्षा केवल उन छात्रों के लिए उपलब्ध है, जो स्कूल में प्रवेश लेते हैं।

वयस्क शिक्षा एक प्रकार की शिक्षा है, जिसमें वयस्क विशिष्ट व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संलग्न होते हैं। यह एक औपचारिक शिक्षा है, जिसे वयस्क अपनी औपचारिक शिक्षा पूरी

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

करने के बाद ले सकते हैं। यह एक प्रकार का स्व-अध्ययन या जीवन भर सीखना है। ऐसे पाठ्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला है जिन्हें वयस्क ले सकते हैं, जिनमें शामिल हैं, लेकिन यहीं तक सीमित नहीं हैं–

- कला के क्षेत्र में शिक्षा,
- व्यवसाय के क्षेत्र में शिक्षा,
- शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा,
- स्वास्थ्य के क्षेत्र में शिक्षा,
- इतिहास के क्षेत्र में शिक्षा।

भारत में वयस्क शिक्षा शुरू करने का मुख्य कारण उन लोगों तक शिक्षा का विस्तार करना था, जो बचपन से बुनियादी शिक्षा से वंचित हैं। 1956 में सरकार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय मौलिक शिक्षा केंद्र ने प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय की शुरुआत की, जिसे बाद में प्रौढ़ शिक्षा विभाग के नाम से जाना जाता है।

वयस्क शिक्षा उन लोगों तक सीमित नहीं है, जिन्हें इसकी आवश्यकता है, बल्कि इसका उद्देश्य उन लोगों के लिए है, जो अपने कौशल को बढ़ाना चाहते हैं या एक नया कौशल हासिल करना चाहते हैं। औपचारिक शिक्षा उन लोगों को प्रदान किए जाने की अधिक संभावना है, जिन्हें इसकी आवश्यकता है, जैसे कि जिन्हें उपचारात्मक शिक्षा की आवश्यकता है।

(घ) 'सामाजिक कार्य एक कैरियर के रूप में।' टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-138, 'कैरियर के रूप में समाज कार्य'

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जनजातीय कल्याण के क्षेत्र में की गई पहलों का क्या महत्त्व है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-16, प्रश्न 4

(ख) सामाजिक कार्य के दृष्टिकोण से जैन धर्म का क्या महत्त्व है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-74, 'समाज कार्य की दृष्टि से जैन धर्म का महत्त्व'

(ग) भूदान और ग्रामदान आन्दोलनों को समालोचनात्मक रूप से देखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-116, 'सर्वोदय विचार–भूदान, ग्रामदान'

(घ) NAPSWI क्या है? NAPSWI के उद्देश्य क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-123, 'भारत में व्यवसाय सामाजिक कार्यकर्ता राष्ट्रीय संघ (नेशनल एसोसिएशन ऑफ प्रोफेशनल सोशल वर्कर्स इन इंडिया)'

(ङ) भारत में किन्हीं दो महत्वपूर्ण किसान आन्दोलनों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-29, 'किसान आंदोलन'

(च) सिख धर्म में निहित सामाजिक कार्य आदर्श क्या हैं? किन्हीं दो के बारे में लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-69, प्रश्न 2

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) चिपको आन्दोलन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-31, 'चिपको आंदोलन'

(ख) बौद्ध धर्म और सामाजिक कार्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-81, 'बौद्ध धर्म और समाज कार्य'

(ग) स्वदेशी

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-95, 'स्वदेशी'

(घ) विकलांगता

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-140, 'अक्षमता'

(ङ) नर्मदा बचाओ आन्दोलन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-32, 'नर्मदा बचाओ आंदोलन'

(च) जैन धर्म में पाँच व्रत

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-72 'नैतिक सिद्धांत'

(छ) सविनय अवज्ञा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-106, 'सविनय अवज्ञा'

(ज) परामर्श

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-140, 'परामर्श'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

व्यावसायिक समाज कार्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य
(Professional Social Work: Indian Perspective)

समाज कार्य का इतिहास : राज्य की पहलें
(History of Social Work: State's Initiations)

1

परिचय

यदि इतिहास पर दृष्टि डालें तो भारत में समाज कार्य का इतिहास भी काफी पुराना है। हालांकि समाज कार्य को व्यवसाय के रूप में स्वीकृति एवं विकसित करने का श्रेय पश्चिमी देशों को है। समाज कार्य व्यवसाय के आधार भारत के इतिहास में मजबूती से विद्यमान है। धर्मनिरपेक्षता, मानवता, कल्याणवाद, बुद्धिवाद, तर्कणावाद, उदारवादी लोकतंत्र, उपयोगितावाद आदि समाज कल्याण कार्य के ही रूप हैं और इन्हीं से समाज का उद्‌भव माना जा सकता है। भारत में धर्म एवं धार्मिक विश्वासों ने कल्याण एवं मानवता की सुरक्षा को बल दिया। भारतीय इतिहास में शासकों, जमींदारों, विदेशी विजेताओं ने जन कल्याण के लिए अनेक सुधार एवं कार्य किए। वर्तमान में संवैधानिक प्रावधान भी समाज कार्य को ही दर्शाते हैं। समाज कार्य एक व्यवसाय के रूप में सामाजिक सेवाओं, दान, सुधार, कल्याण आदि कार्यों से शुरू हुआ माना जा सकता है।

प्रस्तुत अध्याय में भारत में प्राचीन एवं मध्यकालीन शासकों, औपनिवेशिक शासन एवं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार द्वारा समाज कार्य के क्षेत्र में की गई पहलों की चर्चा की गई है।

अध्याय का विहंगावलोकन

प्राचीन भारत में स्थानीय शासकों : राजा, रानी, जमींदारों द्वारा पहलें

वैदिक काल के प्रारंभ से ही भारतीय परंपरा में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की महत्ता रही है। भारतीय समाज में प्रारंभ से ही मानव विकास और उसके कल्याण की भावना निहित रही है। समाज सेवा की यह भावना जीवन के भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न रूपों में दिखाई देती है। इस भावना के कारण ही व्यक्ति और समूह समाज कार्य के प्रति प्रेरित हुए।

पूर्व वैदिक काल में यूरोप और यूनान में अन्वेषण हो रहे थे और यह क्रम भारत में जारी था। पर्यावरण और मानव जाति के संबंधों को सदा महत्व दिया गया है। योजनाबद्ध इमारतों एवं वास्तुकला के साथ शहरीकरण का प्रारंभ इस युग की विशेषता कही जा सकती है। भारत में आर्यों के आगमन से पूर्व भी कानून, सीमाशुल्क, कृषि एवं धर्म जैसी प्रथाएँ विद्यमान थीं और जन-जीवन का संचालन करती थीं।

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के अवशेष तत्कालीन उन्नत एवं उत्कृष्ट नगर नियोजन को दिखाते हैं। हड़प्पा का नगर नियोजन बताता है कि उस समय भी समाज में धनी एवं निर्धन दोनों वर्ग थे। भवनों की वास्तुकला उन्नत एवं आवश्यकता पर आधारित थी। सुनियोजित एवं उन्नत सार्वजनिक स्थल, जल निकास प्रणाली प्रशासन की सुचारु कार्यप्रणाली एवं कल्याणकारी प्रकृति को उजागर करते हैं। उस समय समाज में स्त्रियों का स्थान उच्च एवं प्रतिष्ठापूर्ण था। सिंधु घाटी सभ्यता में समाज कार्य के रूप में मानव के साथ पशुओं का स्थान भी सम्मानजनक था। पशुपति की पूजा इसका प्रतीक है।

आर्यों के ग्रंथ चारों वेदों में वैदिक कालीन जीवन की उच्चतम पद्धतियाँ वर्णित हैं। इनमें मानव जीवन में धार्मिक स्रोतों, संगीत, यन्त्र एवं ज्ञान को श्रेष्ठ स्थान दिया गया है। वेदों का अधिगम 'श्रुति' कहलाता है, क्योंकि इन्हें सुनकर कंठस्थ किया जाता था। 'गुरु' शिक्षा के दौरान बोलता था और शिष्य उन्हें सुनकर अभ्यास करते थे। इसी प्रकार ज्ञान आगे बढ़ता जाता था।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

वैदिक काल में राज्य की सत्ता परिवार और कबीले के रूप में थी। परिवार समाज का केन्द्र था। परिवार वास्तविक या कल्पित सगोत्रता में बँधे होते थे, वंश बनाते थे। अनेक गोत्रों से मिलकर जिला बनता या और जिले से कबीला। कबीला उच्चतम राजनीतिक इकाई था। जनता के कल्याण और सुरक्षा हेतु राजतंत्र ने अनेक शासकीय पद निर्धारित किए। संदेशवाहक और गुप्तचर राज्य, राजतंत्र और समाज से जुड़े कार्यों के प्रति जन भावनाओं का पता लगाते थे। वर्तमान में भी आवश्यकताओं की प्राथमिकता का निर्धारण एक समस्या है। विवाह, शिक्षा, धर्म, कानून आदि आज भी जीवन के प्रमुख अंग हैं। विधानसभाएँ 'सभा' और 'समिति' कहलाती थीं। ये निर्णय करती थीं और इनमें जन सहभागिता को निश्चित किया जाता था।

वैदिक काल में दान नैतिकता का पर्याय था। जरूरतमंदों और निर्धनों की सहायता नैतिक कार्य थी। प्राचीन काल से ही दान की महत्ता प्रतिपादित है। महाभारत के कर्ण को 'दानवीर' कहा जाता है। राजा हरिश्चंद्र को 'सत्यवादी' तथा राजा भोज को 'न्यायप्रिय' शासक के रूप में मान्यता मिलना नैतिक मूल्यों की सामाजिक जीवन में महत्ता और प्राचीनता का उदाहरण है। आज हम पुनः नैतिक मूल्यों की बात कर रहे हैं और यही मूल्य भारतीय संस्कृति का अंग थे। वैदिक काल में महिलाओं का समाज में बराबर का स्थान था। मैत्रेयी, अपाला आदि इसका उदाहरण हैं। क्षेत्रीय राज्यों में वृद्धि से स्त्रियों की प्रस्थिति निम्न हुई। वैदिक काल में मानव जीवन के 40 संस्कार थे जिनका संबंध आयु वृद्धि एवं विकास से था। विवाह के आठ प्रकार अवैध थे। वर्तमान में भी महिला-समस्या के मूल में समाज कार्य को इसी प्रकार की चुनौतियाँ मिलती हैं। प्राचीनकालीन आश्रम पद्धति मानव को अनुशासन संबंधी कर्त्तव्य सिखाती थी।

मौर्य काल में प्रशासन अलग-अलग विभागों में बँटा था। अशोक ने हिंसा छोड़कर बौद्ध धर्म अपनाया और जीवन को मानव-मूल्यों की भेंट कर दिया। उसने बौद्ध धर्म के अष्टांग मार्ग को अपनाया। वर्तमान में NGO एवं नागरिक समाज संगठन इन्हीं प्राचीन नैतिक मूल्यों के मानकों को अपनाकर समाज कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं।

कनिष्क काल में चरक महान चिकित्सक था। उसकी चिकित्सा पद्धति आज भी प्रासंगिक है। इसी प्रकार भैशाज्यगृह में कौटिल्य द्वारा भी चिकित्सा संबंधी वर्णन मिलते हैं जिनमें पशु-पक्षियों की चिकित्सा भी शामिल थी। साथ ही खारवेल के सिंचाई, नहरों, बागों आदि संबंधी कार्य प्राचीन भारत में जनकल्याण की प्रवृत्ति के ही उदाहरण हैं।

भारत की शासन पद्धति अत्यंत सुचारु थी। 'मनुस्मृति', 'अर्थशास्त्र' तथा 'महाभारत' के वर्णन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। 'मनुस्मृति' के अनुसार राजा ईश्वर का रूप था। 'अर्थशास्त्र' और 'महाभारत' की निर्वाचक प्रणाली को 2000 साल बाद लॉक, हॉब्स और रूसो ने सामाजिक संविदा सिद्धांत कहा। अर्थशास्त्र में जीवन के सभी पक्षों से जुड़ी भूमिकाओं का वर्णन है। जान-माल की सुरक्षा, न्याय, व्यापार और उद्योग का राष्ट्रीयकरण, आर्थिक नियंत्रण राज्य के कार्यों में शामिल थे, परंतु कार्यक्षेत्र की सीमा में नहीं बँधे थे परंतु वर्तमान में इन्हें समाजवादी शासन में बढ़ावा दिया जा रहा है। राज्य का नियंत्रण चिकित्सक, वेश्याओं, मनोरंजन जुए आदि पर भी था। असहायों, अनाथों एवं वृद्धों की रक्षा का दायित्व राज्य पर था। राज्य पारिवारिक दायित्वों का निर्धारक भी था। राजा धर्म के अनुसार शासन करता था इसीलिए कल्याणकारी राज्य प्राचीन भारत की आदर्श विशेषता है। पुराणों में भी ऐसा ही उल्लेख है, जनकल्याण ही सबसे महत्त्वपूर्ण था।

प्राचीन काल में भी परिवार समाज और राज्य की केन्द्रीय इकाई था। आजीविका कमाने वाले सदस्य पर माता-पिता एवं अन्य आश्रितों के पोषण का भार था। पत्नी और बच्चों को भरण-पोषण का प्रबंध किए बिना योगी बनने वाले व्यक्ति को राज्य दंड देता था। राज्य परिवार के अवयस्क एवं जरूरतमंदों की रक्षा का कानूनी अभिभावक था। राज्य में न्यायालय थे तथा गुप्तचरों द्वारा सूचनाएँ प्राप्त की जाती थीं। राज्य गरीबों की सहायता को अपना दायित्व मानता था। सूखा, बाढ़ जैसी आपदाओं में विशेष सहायता दी जाती थी। युआन-त्वांग ने जरूरतमंदों और समस्याग्रस्त लोगों की सहायता के लिए बने विश्रामगृहों का उल्लेख किया है। इनमें भोजन, चिकित्सा एवं अन्य जरूरतों का ध्यान रखा जाता था।

राज्य असहायों, विकलांगों, अनाथों, महिलाओं आदि को रोजगार प्रदान करता था। राज्य आश्रितों की देखभाल करता था और प्रशिक्षण द्वारा उन्हें अनेक उत्तरदायित्व देता था। महिलाओं को लोगों के कार्यों पर नजर रखने वाले के रूप में गुप्तचर का कार्य सौंपा जाता था।

व्यापार नीतियाँ लोक मैत्रीपूर्ण थीं। राजा जनता के बीच आकर व्यापारियों से मोल-भाव करता था। राज्य ही मूल्य नियंत्रण करता था और व्यापार में भ्रष्टाचार करने वालों को दंड दिया जाता था। समय-समय व्यापारिक वस्तुओं में मिलावट एवं माप-तोल के मानकों की जाँच की जाती थी। राज्य दोबारा घर बनवाता था। सिंचाई एवं जल परियोजनाओं की व्यवस्था करता था। जनता को अनेक प्रकार की सहायता दी जाती थी। राज्य महिलाओं को दस्तकारी एवं बुनाई जैसे व्यवसाय अपनाने में सहायता करता था। भूमिहीन किसानों को आर्थिक सहायता दी जाती थी।

मालिक गुलामों से शवों को ले जाने, मल-मूत्र उठवाने जैसे कार्य नहीं करवा सकते थे तथा महिला गुलामों का शोषण निषेध था। आज भी समाज कार्य में सफाईकर्मियों के अधिकारों की पुनः प्रतिष्ठा एक चुनौती है। राज्य जनसुविधा के लिए उद्यानों, मनोरंजन केंद्रों, सिंचाई, श्मशान घाट, यात्री निवास आदि का दायित्व उठाता था। साथ गाँवों की सीमा, लोगों की जानकारी, भूमि का क्रय-विक्रय, परिवार के सदस्यों एवं पशुधन की गणना, कर निर्धारण, कर संग्रह,

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

कर छूट, जन्म-मृत्यु, आय-व्यय का लेखा-जोखा रखना राज्य के कार्य थे। ये कार्य नगर प्रशासन के स्थानीय प्रभारी करते थे। सरकारी खातों से छेड़छाड़ एवं छल-कपट गंभीर अपराध थे।

अपस्तम्बा ने कल्याणकारी राज्य के बारे में कहा है कि भोजन, वस्त्र, आश्रय, चिकित्सा राज्य का दायित्व था। राज्य सभी के कल्याण के लिए उत्तरदायी था। राजधानी में राजकीय अतिथिगृह सभी के लिए उपलब्ध थे।

भारतीय संस्कृति आक्रमणों से काफी प्रभावित हुई है और इसी के फलस्वरूप आर्य, अरब, मुगल, ब्रिटिश आदि संस्कृतियों ने इसे प्रभावित किया। अरबी आक्रमणों ने व्यापार-वाणिज्य को बढ़ावा दिया। भारत से मसालों, कपास, वस्त्र, मलमल, मोती और कीमती पत्थरों का निर्यात होता था। चांदी, सिंदूर, सोना, गुलाबजल, केसर, अफीम आदि आयात की वस्तुएँ थीं। इसी अवधि में इस्लाम धर्म एक प्रमुख धर्म के रूप में उभरा और उसमें दान, आत्मनियंत्रण, रमजान में उपवास आदि पर जोर देना जन कल्याण की महत्ता को दर्शाता है।

भारतीय एवं अरब संस्कृति के मेल से भारतीय धर्म ग्रंथ अन्य देशों तक पहुँचे। चौथे खलीफा अली लिखता है कि भारत में ही सबसे पहले ग्रंथ लिखे गए एवं ज्ञान का उद्भव हुआ। 'पंचतंत्र' का अरबी में अनुवाद करना तथा यूरोप में ले जाना नैतिक शिक्षा में भारत की उच्चता का प्रतीक है। 'हितोपदेश' ने पशुओं के संरक्षण और सम्मान पर बल दिया।

सल्तनत काल में इल्तुतमिश ने शिक्षा के संरक्षक के रूप में अनेक मदरसे एवं शिक्षा संस्थान स्थापित किए। सल्तनत काल अपने न्याय और प्रशासन के लिए प्रसिद्ध है। सुदृढ़ बाजार नीतियाँ, सेना, गुप्तचर प्रणाली, सिक्कों का निर्माण उसके प्रशासन का आधार थे।

शेरशाह सूरी भी जन कल्याणक शासक था। सराय और डाक चौकियाँ बनवाना एवं जी.टी. रोड का निर्माण उसकी महान उपलब्धियाँ थीं। मुगलकाल में धर्म, दर्शन, कर प्रणाली, वास्तुकला आदि क्षेत्रों में नए आयाम सामने आए। बाल विवाह का निषेध, शराबखोरी के लिए दंड, गुलाम कानून, चिकित्सा सहायता, शिक्षा प्रणाली संबंधी कार्य अकबर को महान समाज सुधारक की श्रेणी में ला खड़ा करते हैं। अकबर ने धार्मिक सद्भाव के लिए दीन-ए-इलाही चलाया, हिंदुओं से मजबूत संबंध बनाए। भक्ति आंदोलन ने भी इस दौरान उच्च मानवीय आदर्शों की स्थापना में सहयोग दिया।

उपनिवेशी पहलें : फ्रांसीसी, ब्रिटिश, पुर्तगाली शासन आदि

भारत में उपनिवेशी शासन पहले के सभी शासनों से भिन्न था। पहले के आक्रमणकारी शासक देश के मूल निवासियों के संग घुलमिल जाते थे। इससे समाज की व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं हुआ किंतु उपनिवेशी शासक सदैव अलग रहे। वे अपने साथ धर्म, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, कानून आदि की नई व्यवस्था लाए, जिसने भारतीय समाज के स्वरूप को पूर्णतः बदलकर रख दिया। 15वीं सदी के अंत में सबसे पहले पुर्तगाली नाविक वास्को-दि-गामा ने व्यापार स्थापित किया और यहीं से भारत में उपनिवेशी शासन की नींव पड़ी। पुर्तगालियों के बाद फ्रांसीसी एवं ब्रिटिश यहाँ आए।

भारत में यूरोपीय बस्तियाँ—यूरोप में इंग्लैंड, हालैंड, पुर्तगाल, फ्रांस एवं डेनमार्क में भारत, एशिया एवं अफ्रीका से व्यापार हेतु कंपनियाँ बनाई गई। इन कंपनियों ने भारत में भी अपने व्यापार केंद्र बनाए जो ज्यादातर तटीय क्षेत्रों में थे।

1. पुर्तगाली बस्तियाँ—उपनिवेशी शासकों में पुर्तगाली सबसे पहले भारत आए। इसका कारण था, ऑटोमन राज्य द्वारा एशिया के परंपरागत व्यापार मार्ग बंद करना और पुर्तगाल की इटली से प्रतियोगिता। 1498 में वास्को-डि-गामा केरल में कालीकट पहुँचा। इसके बाद पुर्तगालियों ने 16 वीं सदी के शुरू में पश्चिमी तट एवं सीलोन पर अपनी चौकियाँ बनाईं। कन्नूर में सेंट अंगेलो फोर्ट अपनी संपत्ति की रक्षा के लिए बनाया। पुर्तगालियों ने गोवा पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। मुंबई, दमन और दीव पुर्तगाली बस्तियों के केंद्र थे। 1661 में पुर्तगाली राजकुमारी कैथेरीन के दहेज के रूप में मुंबई ब्रिटिश क्राउन को दे दी गई।

2. ब्रिटिश/इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी—इंग्लैंड में महारानी एलिजाबेथ ने 1600 में प्रथम चार्टर पास किया और भारत तथा पूर्वी एशिया से व्यापार के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी बनी। 1612 में ब्रिटिश सूरत पहुँचे तथा सम्राट जहाँगीर की अनुमति से उन्होंने कलकत्ता एवं मद्रास में अपनी चौकियाँ बनाईं। ब्रिटिशों ने राज्यों को सैनिक सहायता दी तथा उनकी राजनीति में प्रवेश करने लगे। 1700 के दशक में ब्रिटेन और फ्रांस में प्रॉक्सी युद्ध हुए। राबर्ट क्लाइव ने फ्रांसीसियों को हराकर ब्रिटिश राज्य को काफी विस्तृत किया। 19वीं शताब्दी के प्रारंभ तक पूरे भारत पर ब्रिटिशों का अप्रत्यक्ष शासन हो चुका था। ब्रिटिश शासन के प्रभाव तथा भेदभावपूर्ण नीतियों के कारण 1857 का विद्रोह हुआ। परिणामस्वरूप ब्रिटिश सम्राट ने भारत को अपने अधिकार में ले लिया। इस समय तक ब्रिटिश शासन भारतीय उपमहाद्वीप में बर्मा से अफगानिस्तान तक फैल चुका था।

3. फ्रांस/फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी—फ्रांस ने भी भारत में अपने व्यापार केंद्र बनाए। 18वीं शताब्दी के मध्य तक फ्रांस भी एक शक्तिशाली राज्य था। दक्षिण भारत में फ्रांसीसियों का अधिकार था, परंतु ब्रिटिशों की बढ़ती शक्ति के सामने वह पराजित हो गया।

4. डच/डच ईस्ट इंडिया कंपनी—डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में तटीय क्षेत्रों एवं अन्य स्थानों पर अपने व्यापार केंद्र बनाए। मालाबार के पूर्वी तट, कोरोमंडल, दक्षिणी तट एवं सूरत पर काफी समय इनका शासन रहा। पुर्तगालियों से सीलोन (श्रीलंका) जीतने के बाद इनका प्रभाव क्षेत्र बढ़ गया। इन्होंने ट्रावनकोर,

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

तमिलनाडु, राजशाही (वर्तमान बांग्लादेश), पिपली, हुगली, मुर्शिदाबाद, बालासोर, बर्मा, अराकान तक अपने अपने व्यापार केंद्र बनाए। नेपोलियन से पराजय के कारण डच वियना कांग्रेस में सीलोन खो बैठे। डचों का प्रभाव भारत में कम ही रहा।

5. डेनिस–डेनमार्क भारत में आने वाली अंतिम उपनिवेशी ताकत थी। उसने तमिलनाडु, प. बंगाल, निकोबार द्वीप समूह में 18वीं शताब्दी में व्यापार चौकियाँ बनाईं। डेनिस और स्वीडिश ईस्ट इंडिया कंपनी के यूरोप में चाय के अधिक आयात से उनकी चौकियों का आर्थिक महत्त्व खत्म हो गया। 1845 में अंतिम डेनिस चौकी ब्रिटिश को बेच दी गई।

6. अन्य विदेशी शक्तियाँ–बेल्जियम, इटली एवं जर्मनी जैसी उपनिवेशी शक्तियाँ भारत में नहीं आ पाई। स्पेन भारत में इसलिए नहीं आ सका क्योंकि 1493 में पोप अलेक्जेंडर IV ने उसकी सीमा रेखा निर्धारित की थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापान का अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह पर कुछ समय अधिकार रहा।

उपनिवेशी अवधि के दौरान राज्य की पहलें–उपनिवेशी राज्यों का मुख्य उद्देश्य अपना विस्तार था। 19वीं शताब्दी में राजस्व संग्रह एवं कानून व्यवस्था बनी रहे, इसके लिए प्रशासन ने कुछ अन्य पहलुओं पर ध्यान देना शुरू किया।

भारत में दुर्भिक्ष–कृषि प्रधान देश होने के कारण भारत सदैव मानसून पर निर्भर रहा है। भारत में सिंचाई के लिए नहरें व अन्य विधियाँ नाममात्र को थी। फलस्वरूप मानसून फेल होने पर अकाल की स्थिति आ जाती थी। अच्छी पैदावार होने पर भंडारण की सुविधा ने होने से बचाकर नहीं रखा जा सकता था। भारत में 1770 से 1880 के बीच तेरह बार अकाल पड़े। शासन के पास इस समस्या से निपटने के लिए कोई निश्चित नीति न होने से किए गए प्रयास असफल ही रहे और देश को बीच बड़े और छोटे अकालों का सामना करना पड़ा।

इंग्लैंड के पुअर लॉ के अनुभव से उपनिवेशी राज्य ने दुर्भिक्ष के दौरान जरूरतमंदों के बड़ी राशि सहायता के रूप में देने की नीति अपनाई। 1861 में इस नीति में परिवर्तन कर निजी एजेंसियों को बराबर का अनुदान दिया गया जिससे दुर्भिक्ष में निराश्रितों को खाना खिलाया जा सके, किंतु वित्तीय दबाव को देखते हुए राज्य ने जानें बचाने की नीति छोड़ दी।

1880 में उपनिवेशी राज्य को दुर्भिक्ष आयोग नियुक्त करना पड़ा तथा 1883 में दुर्भिक्ष संहिता तैयार की गई। आयोग ने दुर्भिक्ष राहत, बीमा एवं कृषि पर निर्भर लोगों के लिए वैकल्पिक रोजगारों की सिफारिश की किंतु प्रशासक उदासीन ही बने रहे। दुर्भिक्ष संहिताओं में स्थिति के अनुरूप संशोधन होते रहे। 19वीं शताब्दी के अंत तक राज्य का रुख दुर्भिक्ष निवारण के संबंध में बदल रहा था। निवारक उपायों के बाद 1907-08 तथा 1943 में ही बड़े दुर्भिक्ष उपनिवेशी राज्य क्षेत्र में देखे गए।

कृषि सुधार के उपाय–1885 में कानून में यह प्रावधान हुआ कि यदि काश्तकार के पास जमीन 12 वर्ष से है तो उस पर उसका अधिकार होगा। कांग्रेस के दबाव से 20वीं शताब्दी के शुरू में कृषि विभाग बना। लॉर्ड कर्जन के कार्यकाल में रॉयल कृषि संस्थान स्थापित हुआ जिसमें कृषि प्रशिक्षण, अनुसंधान और प्रयोग की सुविधा थी। देश में अनेक कृषि स्कूल और कॉलेज भी खोले गए। परिवहन के विस्तार से जूट, कपास, तंबाकू, गन्ना जैसी नकदी फसलों के उगाने पर बल दिया गया।

परिवहन का विकास–लॉर्ड डलहौजी के कार्यकाल में 1853 में बंबई और ठाणे के बीच पहली रेलवे लाइन शुरू हुई। बाद में कलकत्ता को रानीगंज के कोयला क्षेत्रों से तथा बंबई को कल्याण से जोड़ा गया। 1856 में एराकोनम और मद्रास को जोड़ने के लिए एक नई लाइन खाली गई।

धीरे-धीरे रेलवे का विकास होता गया। बंबई, कलकत्ता, मद्रास आदि क्षेत्रों को उनके भीतरी भागों से जोड़ा गया क्योंकि इन क्षेत्रों से कच्चा माल आता था। किंतु देश के विभिन्न भागों को जोड़ने पर बल नहीं दिया। प्रभारित भाड़ा नीति भी उपनिवेशी हित के अनुरूप थी।

सरकार और निजी कंपनियों के प्रयासों से 1876 तक 5000 मील रेल लाइनें बिछ चुकी थीं। 19वीं सदी के अंत तक 25000 मील रेलवे लाइनें बिछाई गईं। रेलवे ने हजारों अकुशल श्रमिकों को रोजगार के अवसर दिए।

परिवहन के विकास से पूरा देश उपनिवेशी राज्य के नियंत्रण में आ गया। पूरे देश में एक समान कानून और प्रशासन स्थापित किया। देश में राजनैतिक एकता पुष्ट हुई। परिवहन और संचार ने लोगों को एक-दूसरे से जोड़ दिया।

शिक्षा सेवाएँ–ब्रिटिश शासन में राज्य की ओर से पहल का क्षेत्र शिक्षा था। 1813 के चार्टर के अनुरूप कंपनी प्रशासन ने भारत में शिक्षा का उत्तरदायित्व संभाला तथा भारत में शिक्षा की राज्य प्रणाली प्रारंभ हुई। 1813 में चार्टर के अनुसार शिक्षा अनुदान की राशि एक लाख थी, जो 1833 तक बढ़कर दस लाख तक बढ़ गयी। विलियम बैंटिक ने 1835 में पश्चिमी शिक्षा प्रणाली के प्रारंभ का निर्णय लिया। 1844 में अंग्रेजी राजभाषा बन गई और अंग्रेजी जानने वालों को सरकारी नौकरी में प्राथमिकता दी गई।

1854 में वुड घोषणा पत्र (Woods Dispatch) द्वारा प्राथमिक विद्यालय से विश्वविद्यालय तक की शिक्षा की योजनाबद्ध प्रणाली की घोषणा की गई। 1854 तक उपनिवेशी राज्य की शिक्षा नीति अधोगामी निस्यंदन सिद्धांत (Downward Filtration Theory) पर आधारित थी इसके अनुसार कंपनी कुछ लोगों को शिक्षा देगी तथा वे लोग जनता को शिक्षित कर सकें।

1857 के बाद शासन सीधे सम्राट के हाथों में आ गया और जनसमूह के कल्याण की घोषणा की गई। भारत में 1882-83 से 1932-33 तक शिक्षा व्यय दस गुणा तक बढ़ गया। भारत में नई

www.neerajbooks.com